REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2024

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में डॉ. भीमराव आंबेडकर: सामाजिक न्याय के अंतरराष्ट्रीय विमर्श की एक समीक्षात्मक प्रस्तुति

डॉ. दिपिका आर. चौधरी
असिस्टेंट प्रोफेसर
श्रीमती एस. आई. पटेल इप्कोवाला कॉलेज ऑफ एज्युकेशन, पेटलाद (गुजरात)

सारांश

डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर का चिंतन सामान्यतः भारतीय समाज की जाति-समस्या, दलित-विमर्श तथा भारतीय संविधान के संदर्भ में अधिक चर्चित रहा है, परंतु उनका वैचारिक अवदान केवल राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं है। उन्होंने जिस सामाजिक न्याय, मानवीय गरिमा, समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व की स्थापना के लिए आजीवन संघर्ष किया, वह मूलतः विश्वमानवीय महत्व का प्रश्न है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य आंबेडकर के विचारों को वैश्विक दृष्टि से पुनर्पाठित करना है, विशेषतः दलित भारतीयों तथा अफ्रीकी-अमेरिकियों के ऐतिहासिक संघर्षों की तुलनात्मक पृष्ठभूमि में।

अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि भारत की जाति-आधारित संरचना और अमेरिका की नस्ल-आधारित व्यवस्था भले ही ऐतिहासिक रूप से भिन्न हों, तथापि दोनों ही मनुष्य की गरिमा को नष्ट करने वाली दमनकारी व्यवस्थाएँ रही हैं। एक ओर दलितों ने अस्पृश्यता, सामाजिक बहिष्कार और अवसर-वंचना का अनुभव किया, तो दूसरी ओर अफ्रीकी-अमेरिकियों ने दासता, नस्लीय पृथक्करण और नागरिक अवमानना का सामना किया। इस अर्थ में दोनों संघर्षों की आत्मा समान है, क्योंकि दोनों का अंतिम ध्येय सम्मानपूर्ण जीवन, समान अधिकार और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना है।

इस शोध में डॉ. आंबेडकर और डब्ल्यू. ई. बी. डु बोइस के वैचारिक साम्य तथा डॉ. आंबेडकर और मार्टिन लूथर किंग जूनियर के संघर्षशील व्यक्तित्व का तुलनात्मक विवेचन किया गया है। यह निष्कर्ष रूप में प्रतिपादित किया गया है कि डॉ. आंबेडकर को केवल भारतीय सामाजिक परिवर्तन के नेता के रूप में नहीं, बल्कि वैश्विक न्याय-चेतना के एक महत्त्वपूर्ण दार्शनिक और मानव-मुक्ति के प्रणेता के रूप में समझा जाना चाहिए।

प्रमुख चावीरूप शब्द : आंबेडकर, वैश्विक परिप्रेक्ष्य, दलित, अफ्रीकी-अमेरिकी, सामाजिक न्याय, जाति, नस्ल, मानवाधिकार, समता।

❖ प्रस्तावना

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आधुनिक भारत के उन विलक्षण चिन्तकों में अग्रगण्य हैं, जिनका व्यक्तित्व बहुआयामी होते हुए भी अपने मूल में मानवीय गरिमा की पुनर्स्थापना से जुड़ा हुआ है। वे एक साथ विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, समाजचिन्तक, शिक्षाशास्त्री और राष्ट्रनिर्माता थे; तथापि उनकी सबसे बड़ी पहचान उस विचारक की है, जिसने इतिहास के हाशिये पर धकेले गए मनुष्य को सामाजिक न्याय के केंद्र में स्थापित किया।

आंबेडकर का चिंतन भारतीय जाति-व्यवस्था की आलोचना से प्रारंभ होकर मानव समाज में व्याप्त सभी प्रकार की असमानताओं के विरुद्ध एक व्यापक नैतिक प्रतिरोध में रूपांतरित हो जाता है। इसीलिए उनका अध्ययन केवल भारत तक सीमित न रखकर विश्व के अन्य

उत्पीड़ित समुदायों के संघर्षों के आलोक में किया जाना चाहिए। अफ्रीकी-अमेरिकी समाज का नस्लीय अनुभव और भारतीय दलित समाज का जातिगत अनुभव इस संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन के लिए अत्यंत उपयुक्त आधार प्रदान करते हैं।

❖ अध्ययन की आवश्यकता

समकालीन समय में सामाजिक न्याय का विमर्श केवल विधिक या राजनीतिक बहस का विषय नहीं रह गया है, बल्कि यह मानवाधिकार, सांस्कृतिक गरिमा और नैतिक समानता का मूल प्रश्न बन चुका है। ऐसे समय में डॉ. आंबेडकर के विचारों को वैश्विक स्तर पर पुनः समझना अत्यंत आवश्यक है।

जाति और नस्ल, दोनों ही ऐसी व्यवस्थाएँ रही हैं जिन्होंने मनुष्य को उसकी मनुष्यता से वंचित करने का कार्य किया। इन व्यवस्थाओं के विरुद्ध हुए संघर्षों में केवल सामाजिक सुधार का आग्रह नहीं, बल्कि एक नए नैतिक समाज की रचना का स्वप्न निहित है। इसलिए आंबेडकर का अध्ययन वैश्विक संघर्ष-परंपरा में किया जाना न केवल प्रासंगिक है, बल्कि अनिवार्य भी है।

❖ अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध-पत्र के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. डॉ. आंबेडकर के चिंतन को अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में समझना।
2. दलित भारतीयों और अफ्रीकी-अमेरिकियों के संघर्षों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना।
3. जाति और नस्ल के सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों की समीक्षा करना।
4. डॉ. आंबेडकर, डु बोइस और मार्टिन लूथर किंग जूनियर के वैचारिक संबंधों का परीक्षण करना।
5. सामाजिक न्याय के वैश्विक विमर्श में आंबेडकर की प्रासंगिकता को स्थापित करना।

❖ अनुसंधान-विधि

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः ऐतिहासिक, तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें डॉ. आंबेडकर के विचारों, दलित आंदोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि, अफ्रीकी-अमेरिकी इतिहास, तथा अश्वेत मुक्ति आंदोलन के प्रमुख व्यक्तित्वों के विचारों का तुलनात्मक परीक्षण किया गया है। अध्ययन का स्वरूप गुणात्मक है तथा इसमें वैचारिक सामग्री का व्याख्यात्मक उपयोग किया गया है।

❖ दलित भारतीय और अफ्रीकी-अमेरिकी: उत्पीड़न की दो संरचनाएँ

भारतीय समाज में दलितों के साथ हुआ व्यवहार जातिगत पदानुक्रम, अस्पृश्यता, सामाजिक निषेध और अवसर-वंचना पर आधारित रहा है। दूसरी ओर, अमेरिकी समाज में अफ्रीकी-अमेरिकियों ने नस्लीय भेदभाव, दासता की विरासत, सामाजिक पृथक्करण और नागरिक अधिकारों के हनन का अनुभव किया। यद्यपि दोनों की ऐतिहासिक यात्रा अलग रही, फिर भी दोनों अनुभवों का केन्द्र एक ही है, अर्थात् मनुष्य की गरिमा का व्यवस्थित निषेध।

भारत में जाति जन्म के आधार पर सामाजिक स्थिति का निर्धारण करती रही, जबकि अमेरिका में नस्ल ने त्वचा-रंग और वंश के आधार पर श्रेष्ठता और हीनता की संरचना बनाई। इन दोनों व्यवस्थाओं ने उत्पीड़ित समुदायों के लिए शिक्षा, संसाधन, प्रतिष्ठा और अवसरों के द्वार संकुचित किए। फलतः दलित और अश्वेत, दोनों ही समुदायों का संघर्ष केवल सामाजिक पहचान का संघर्ष नहीं, बल्कि सम्मानपूर्ण अस्तित्व का संघर्ष बन गया।

❖ जाति और नस्ल: भिन्न इतिहास, समान पीड़ा

जाति और नस्ल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमियाँ अलग हैं, परंतु उनके द्वारा निर्मित अन्याय की प्रकृति में गहरा साम्य दिखाई देता है। दोनों व्यवस्थाएँ यह मानकर चलती हैं कि कुछ मनुष्य स्वभावतः उच्च हैं और कुछ निम्न। यह विचार स्वयं में लोकतंत्र, न्याय और मानवाधिकार की मूल भावना के प्रतिकूल है।

आंबेडकर ने भारतीय समाज में जाति को केवल सामाजिक विभाजन नहीं, बल्कि नैतिक विघटन की व्यवस्था माना। उसी प्रकार अश्वेत चिन्तकों ने नस्लीय व्यवस्था को मानवता के विरुद्ध अपराध के रूप में देखा। इस दृष्टि से जाति और नस्ल दोनों ही स्थानीय संरचनाएँ होते हुए भी एक सार्वभौमिक नैतिक प्रश्न को जन्म देती हैं, और वह प्रश्न है मनुष्य की अस्मिता का।

❖ डॉ. आंबेडकर और डब्ल्यू. ई. बी. डु बोइस

डॉ. आंबेडकर का बौद्धिक दृष्टिक्षेत्र अत्यंत व्यापक था। कोलंबिया विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान उन्होंने अमेरिकी समाज में अश्वेतों की स्थिति को समझा और उसे भारतीय दलितों की दशा से तुलनीय पाया। उन्होंने अस्पृश्यता को दासता के एक अप्रत्यक्ष रूप के रूप में देखने का प्रयास किया।

डब्ल्यू. ई. बी. डु बोइस ने अश्वेतों के प्रश्न को मानवाधिकार के स्तर पर उठाया। आंबेडकर भी इसी प्रकार दलित प्रश्न को मूलभूत मानवीय अधिकारों से जोड़ते हैं। दोनों के मध्य हुआ पत्राचार इस बात का महत्त्वपूर्ण संकेत है कि आंबेडकर भारतीय समाज की समस्या को वैश्विक उत्पीड़न-विमर्श से पृथक नहीं देखते थे। इस प्रकार उनका दृष्टिकोण अंतर्मुखी नहीं, बल्कि तुलनात्मक और विश्वोन्मुख था।

❖ डॉ. आंबेडकर और मार्टिन लूथर किंग जूनियर

डॉ. आंबेडकर और मार्टिन लूथर किंग जूनियर के संघर्षों की ऐतिहासिक परिस्थितियाँ अलग थीं, परंतु दोनों के जीवन का लक्ष्य एक ही था, शोषित समुदाय को सम्मानपूर्ण स्थान दिलाना। आंबेडकर ने जाति-व्यवस्था और अस्पृश्यता के विरुद्ध संघर्ष किया, जबकि किंग ने नस्लीय विभाजन और अश्वेतों के नागरिक अधिकारों के लिए आंदोलन किया।

दोनों नेताओं में एक समानता यह भी थी कि उन्होंने अपने-अपने समुदाय को आत्मसम्मान, संगठन और संघर्ष की दिशा प्रदान की। आंबेडकर ने शिक्षा, विधिक अधिकार, प्रतिनिधित्व और सामाजिक पुनर्निर्माण को परिवर्तन का आधार माना। किंग ने नैतिक प्रतिरोध, जनांदोलन और नागरिक अधिकारों की चेतना के माध्यम से समाज को चुनौती दी। दोनों इस सत्य के उद्घोषक थे कि कोई भी समाज तब तक न्यायपूर्ण नहीं हो सकता, जब तक वह अपने सबसे वंचित मनुष्य को सम्मानपूर्वक जीने का अधिकार न दे।

❖ आंबेडकर का वैश्विक महत्त्व

आंबेडकर का वैश्विक महत्त्व इस तथ्य में निहित है कि उन्होंने सामाजिक न्याय को व्यवहारिक कार्यक्रम, वैचारिक प्रतिरोध और संवैधानिक सिद्धांत, तीनों रूपों में विकसित किया। उन्होंने केवल अन्याय की आलोचना नहीं की, बल्कि एक ऐसे समाज की कल्पना भी प्रस्तुत की जिसमें मनुष्य का मूल्य जन्म नहीं, बल्कि उसकी मनुष्यता से निर्धारित हो।

आज विश्व के विविध समाज नस्ली, जातीय, सांस्कृतिक और धार्मिक विभाजनों से जूझ रहे हैं। ऐसे समय में आंबेडकर का चिंतन हमें यह सिखाता है कि लोकतंत्र केवल शासन-पद्धति नहीं, बल्कि सामाजिक संबंधों की नैतिकता भी है। यदि समाज में गरिमा, समता और बंधुत्व अनुपस्थित है, तो लोकतंत्र का बाह्य ढाँचा भी अंततः खोखला सिद्ध होगा। इसीलिए आंबेडकर का पुनर्पाठ वैश्विक न्याय-विमर्श के लिए अत्यंत आवश्यक है।

❖ शैक्षिक एवं सामाजिक निहितार्थ

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि आंबेडकर को केवल ऐतिहासिक व्यक्तित्व के रूप में पढ़ना पर्याप्त नहीं है। उनके विचारों को शिक्षा, नागरिकता, सामाजिक संवेदना और लोकतांत्रिक संस्कृति के निर्माण में सक्रिय रूप से समाविष्ट किया जाना चाहिए। यदि नई पीढ़ी को यह समझाया जाए कि जाति और नस्ल जैसी व्यवस्थाएँ मनुष्य की गरिमा के प्रतिकूल हैं, तो समाज अधिक न्यायपूर्ण दिशा में अग्रसर हो सकता है।

आंबेडकर की दृष्टि यह भी बताती है कि विधि द्वारा प्रदत्त समानता तब तक अधूरी है, जब तक समाज की चेतना में समानता का संस्कार न जगे। अतः शिक्षा, संवाद और सांस्कृतिक परिवर्तन, सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए अनिवार्य तत्त्व हैं।

❖ उपसंहार

उपस्थित अध्ययन से यह निष्कर्ष उभरकर सामने आता है कि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का चिंतन केवल भारतीय दलित प्रश्न तक सीमित नहीं है, बल्कि वह वैश्विक मानव-मुक्ति की विचारधारा से गहराई से जुड़ा हुआ है। दलितों और अफ्रीकी-अमेरिकियों के संघर्षों का तुलनात्मक अवलोकन यह सिद्ध करता है कि दमन की संरचनाएँ भिन्न होते हुए भी, उनके विरुद्ध प्रतिरोध का नैतिक आधार एक ही है, मानवीय गरिमा की स्थापना।

अतः डॉ. आंबेडकर को केवल एक राष्ट्रीय नेता के रूप में नहीं, बल्कि वैश्विक सामाजिक न्याय के प्रखर चिन्तक के रूप में पुनः स्थापित किया जाना चाहिए। उनका चिंतन आज भी उतना ही प्रासंगिक है, क्योंकि जब तक संसार में असमानता, अपमान और बहिष्कार विद्यमान हैं, तब तक आंबेडकर की आवाज़ मानव-मर्यादा की पुकार बनकर जीवित रहेगी।

❖ संदर्भ सूची

- मीना वर्मा, & पूजा जोरसिया. हिंदी साहित्य में दलित विमर्श: स्वरूप, संवेदना और सरोकार. *IJLRP-International Journal of Leading Research Publication*, *7*(2).
- Ambedkar, B. R., & Moon, V. (1979). Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches.
- Ambedkar, B. R. (2022). *Castes in India: Their mechanism, genesis, and development*. DigiCat.
- Delany, M. R. (1993). *The condition, elevation, emigration, and destiny of the colored people of the United States*. Black Classic Press.
- Jaffrelot, C. (2019). *Bhimrao Ambedkar: Ek Jeevani*. Rajkamal Prakashan.
- King Jr, M. L. (2010). *Where do we go from here: Chaos or community?* (Vol. 2). Beacon Press.
- King, M. L. (2011). *Stride toward freedom: The Montgomery story*. Souvenir Press.
- Paik, S. (2022). Dr Ambedkar and the 'Prostitute': Caste, sexuality and humanity in modern India. *Gender & History*, *34*(2), 437-457.